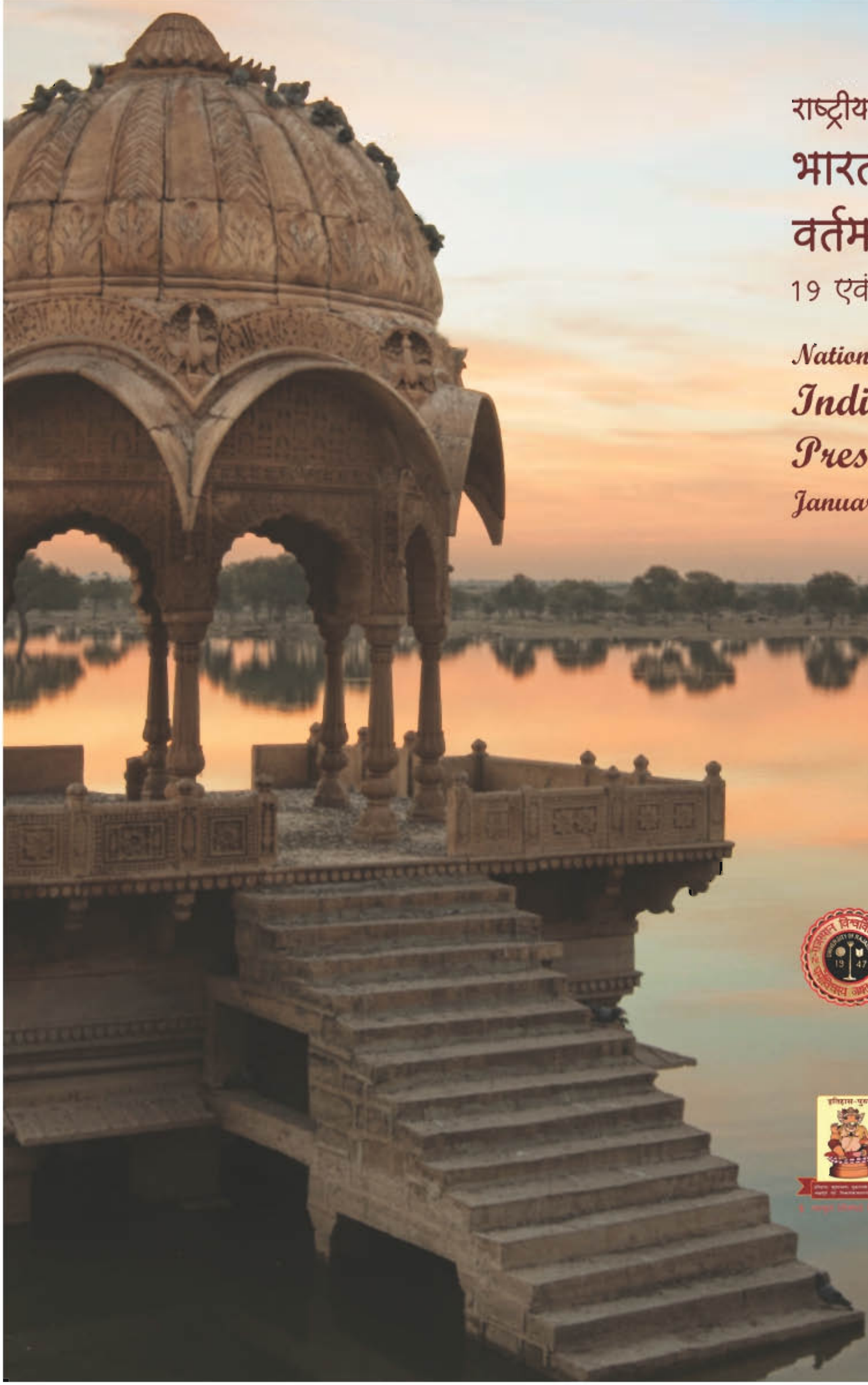

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय इतिहास लेखन: वर्तमान परिदृश्य तथा संभावनाएं

19 एवं 20 जनवरी, 2018

National Conference

Indian History Writing: Present Scenario and Prospects

January 19 & 20, 2018

इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

Department of History and Indian Culture
University of Rajasthan, Jaipur

तथा
and

भारतीय इतिहास संकलन समिति
जयपुर प्रांत

Bharatiya Itihasa Sankalan Samiti
Jaipur Division

विषय संकल्पना

इतिहास लेखन एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत साक्ष्यों की उपलब्धता, उनकी पारस्परिक परिपुष्टि, तथ्यों का नीर-क्षीर परीक्षण, कल्पना-प्रसूत विन्यासों, सत्तानिष्ठ प्रयोजनों, साक्ष्य-रचयिताओं के मानसिक आग्रहों तथा व्याख्याकारों की प्रच्छन्न विचार-आस्थाओं की पहचान - इन सारे स्तरों के संश्लेषण-विश्लेषण की वैज्ञानिक प्रक्रिया से विगत काल के यथार्थ को रूपायित करने का प्रयास किया जाता है। इतिहास लेखन का निर्विवाद रूप से स्वीकृत उद्देश्य है - अतीत के घटना-क्रम का यथासंभव सत्य निरूपण।

वास्तविक घटित इतिहास एक वृहत्तम इकाई है और ज्ञात इतिहास उसका न्यूनांश है। इतिहासकार का अभीष्ट है कि ज्ञात इतिहास, जिसकी वह पुनर्रचना करता है, वास्तविक घटित इतिहास का प्रतिबिम्बन करे। इतिहासकार के लिए यह बड़ी चुनौती है!

ऐतिहासिक सत्य का अभिज्ञान अनेक स्तरों पर बाधित होने की संभावना है और तदनुसार इतिहास भ्रंशित होता रहा है। ऐतिहासिक वंचना के ऐसे स्तर हैं - साक्ष्यों की अनुपलब्धता या न्यून/आंशिक उपलब्धता; ऐतिहासिक स्रोतों की रचना में निहित मन्तव्य एवं पूर्वाग्रह; तथ्यों की प्रयोजन-सापेक्ष व्याख्या; निर्धारित मानसिकताओं/विचारधाराओं के अनुसार इतिहास का विश्लेषण; इतिहास का समयानुकूल, अवसरोचित प्रस्तुतीकरण आदि।

शुद्ध, अमिश्रित इतिहास का अभिज्ञान, इतिहास-लेखन की साधना का अभिप्रेत है। यह बड़ा दुष्कर कार्य है, कदाचित् एक अप्राप्य आदर्श! यह भी एक ऐतिहासिक सत्य है कि काल के विभिन्न चरणों में, बदलते हुए राजनीतिक-सामाजिक समीकरणों, विभिन्न वादों-विवादों के विवर्त में, इतिहास-लेखन का कार्य ईमानदारी से नहीं किया गया और विगत समय के साक्ष्य एवं प्रमाण शुद्ध रूप में उपलब्ध नहीं हैं। दूसरे चरण में, ऐतिहासिक व्याख्या की प्रक्रिया में, इतिहास लेखन की क्षति दो स्तरों पर होती है - प्रथम तो वह रूप है जिसमें इतिहास के चयनित तथ्यों का उपयोग किसी प्रयोजन-विशेष या किसी विचारधारा-विशेष की सिद्धि के लिए किया जाता है, जैसा कि साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने किया। दूसरा वह रूप है जिसमें इतिहासकार का निहित प्रयोजन न होने के बावजूद, उसके मनस का अवधारणात्मक रचाव गाहे-बगाहे उसके लेखन में समाविष्ट हो जाता है।

भारतीयों के इतिहास-बोध एवं उनकी इतिहास लेखन पद्धति के बारे में अनेक भ्रांतिपूर्ण एवं नकारात्मक टिप्पणियाँ ब्रिटिश इतिहासकारों ने की। इसका बड़ा सशक्त प्रतिरोध करते हुए भारतीय इतिहासकारों ने वैदिक साहित्य, रामायण एवं महाभारत, पुराण, बौद्ध एवं जैन साहित्य, चरित काव्यों, प्रशस्तियों, अभिलेखों, कला, स्थापत्य, पुरातात्विक अवशेषों आदि के संदर्भ से न केवल भारतीयों के इतिहास को प्रस्तुत किया, बल्कि आरंभिक काल से ही भारतीयों की इतिहास-दृष्टि एवं इतिहास-लेखन की परम्परा को भी रेखांकित किया। भारतीयों ने प्राचीन काल में इतिहास का जो सांस्कृतिक अवबोध प्रस्तुत किया, आधुनिक पश्चिमी इतिहास लेखन भी उसी बिन्दु पर आ गया है!

स्वातंत्र्योत्तर भारत में, विविध विचारधाराओं के इतिहासकारों ने, उन सभी स्थापित मान्यताओं एवं पद्धतियों को चुनौती देना आरंभ कर दिया जो इतिहास लेखन के संबंध में उन्हें विरासत में मिली थीं। संधान के इसी क्रम में, ऐतिहासिक अभिज्ञान की अनेक नवीन विषय-दृष्टियों एवं विधाओं का प्राकट्य हुआ। स्त्रीपरक इतिहास लेखन, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी विषयक अध्ययन, दिक्-काल संबंधी अवधारणाओं का इतिहास, देशज भाषाओं एवं साहित्य में व्यक्त इतिहास की वैकल्पिक दृष्टियाँ, समरूपताओं एवं विविधताओं की संरचना का अध्ययन - इतिहास के अंतर्गत इस प्रकार के अभिनव अध्ययनों ने इतिहास को देखने-समझने की नवीनतर दृष्टियों एवं पद्धतियों को प्रस्तुत किया। इतिहास रचना के स्रोतों के अंतर्गत, लिखित साक्ष्यों के विशेषाधिकार को भी चुनौती दी जाने लगी। इतिहास लेखन के लिए अब पुरातत्त्व, नृवंशविज्ञान, मानव-शास्त्र, भाषा-विज्ञान, कला-इतिहास, लोक संस्कृति, मौखिक परम्पराएँ प्रभृति विविध स्रोतों एवं अंतर-अनुशासनीय पद्धतियों का प्रयोग किया जाने लगा है।

विगत दशकों में भारतीय इतिहास लेखन विषयक जो अनुसंधान हुए हैं, उनसे इस विषय की व्याप्ति, अवधारणात्मक पृष्ठभूमि तथा इतिहासकारों के शोध-वैदुष्य का प्रकाशन हुआ है। लेकिन अभी भी औपनिवेशिक इतिहास लेखन की प्रतिच्छायाओं से हम मुक्त नहीं हो पाये हैं। दूसरी ओर, इतिहास लेखन की नवीन धाराओं को अपनाने से पूर्व उनका परीक्षण भी आवश्यक है। साथ ही, अतीत का भविष्य क्या है, इतिहास लेखन की पूर्णतर एवं वैकल्पिक पद्धतियाँ क्या हो सकती हैं - इन बिन्दुओं पर भी चिंतन अपेक्षित है।

भारतीय इतिहास के यथासंभव अधिकतम शुद्ध लेखन के लिए आवश्यक है कि सतत, अविरल संवाद हो - न केवल इतिहासकार तथा साक्ष्यों के मध्य, बल्कि इतिहासकारों के मध्य भी। इस पृष्ठभूमि को दृष्टिगत रखते हुए इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

CONCEPT

History writing is an intricate process which involves establishing authenticity of evidence by cross-examination, corroborative scrutiny and scientific methodology; unraveling of the prejudices ingrained in the generation of sources; and reconstructing history devoid of ideological inclinations or conscious/ sub-conscious designs. The historian's aim is to bring out the past as it really happened, neither more, nor less.

The past is dichotomous – real past and historical past. The real past supposedly comprises all that has happened and the historical past is the recorded past or the past that has been handed down to posterity. Therefore, as it happens, the history is the recreated past on the basis of available sources and, ipso facto, it only includes that part of the past which was considered worthy of being preserved. The history reconstructed by historians is supposed to correspond with the real past. This is a great challenge for the historians.

There always is a possibility of historical facts/truths getting compromised or obscured at various levels and accordingly history runs the danger of being distorted. The factors or causes of historical inaccuracy are multiple – paucity or partial availability of evidence; bias or prejudice inherent in the historical sources; arbitrary selection of facts and their tendentious interpretation; opportunistic and convenient history-writing to win favours from the powers that be; divisive and hyperbolic history-writing on the lines of caste, creed, community, region, etc.

Pure, unadulterated knowledge of the past is supposedly the principal objective of the pursuit of a historian which somehow appears to be a distant dream, virtually an unattainable ideal. This also is a fact that during the periods of turbulence, changing politico-social equations, and ideological conflicts (debates) - the historical accounts were not written and documentation of the historical data was not done with the same rigour and integrity as it should have been. Therefore, the evidence for writing history now is not available in its pure form. Moreover, at the second stage i.e. the interpretation of the evidence, history may further suffer on two counts: First, when history becomes an instrument to achieve ideological objectives. In this case historical facts are selected and interpreted with some pre-conceived designs as has been done by the imperialist historians. Second, when historian's mental makeup, without any intent or purpose, creeps into his interpretations.

Until the late colonial period, it was widely believed among Western historians that Indians lacked the sense of history and therefore they were the people without history. This colonial pronouncement was contested by the growing rank of Indian intellectuals who vigorously opposed and rejected this notion. Using an array of sources ranging from the vast corpus of Vedic texts, to the great epics Ramayana and Mahabharata, the Buddhist and Jain canonical texts, hagiographies, biographies, inscriptions, chronicles and theatrical compositions - these scholars presented a strong counter by establishing that India not only had a history but also had a tradition of historiography and a sense of history which was different from the modern Western sense of history.

In the post-independence era, several historians coming from different ideological backgrounds began to revisit nearly all assumptions and categories embedded in the historical construct handed down to them. In the process they also brought in newer themes and methods and approaches of looking at history. The history of women and gender, study of ecology and environment, history of the notions of time and space, alternative views of history ingrained in regional language and literature, study of the formation of identities and diversities – these are the examples of ways in which Indian history is being looked at and written. Even in terms of sources for re-construction of history, the privileging of written sources was contested. The historians nowadays adopt the disciplined, rigorous, and corroborative use of a variety of sources and multidisciplinary methods such as archaeology, ethnography, anthropology, linguistics, art history and oral traditions.

Indian historiography has significantly expanded its disciplinary reach, its theoretical directions and approaches, and its scholarship. However, we have not been able to shake off completely the burden of the colonial historiography. Similarly, the assumptions of recent historiography should not be allowed to go uncontested. We must not forget that colonial historiography does continue in its various incarnations even today and several of the assumptions embedded in the so called progressive historiography also need to be revisited in the light of new sources and methods as well as new social concerns emerging out of new milieu that has come to stay. Possibly it is through constant process of revisiting and reworking the construct of the past and reorienting the major concerns of the historiographic discourse that we may be able to arrive at insights that may be exciting, challenging, sometimes disturbing and unsettling, yet may help in constructing an objective account of the Indian past. We must not forget that the key to any progress in historiography consists in the constant interaction, not only between historian and the sources but also among historians themselves.

It is against this background that we wish to organise this conference. The major focus of the conference would be to understand and analyse how our understanding of the past is still influenced by the earlier trends of historiography and to detect whether accounts of the past were driven by narrative, by preconditions, or by theories and what was the practice and uses of historiography. The exercise would also involve the evaluation of the relative weight of different kinds of evidence or sources from the past in the construct of different brands of historiography. Embedded in this is also the desire to continually ask how history works as a means to understand past and present human realities as well as what is the role of the future in the historical questions which we ask and explore today.

उप-विषय

इस संगोष्ठी के मुख्य विषय को निम्नलिखित उप-विषयों में वर्गीकृत किया गया है-

1. **भारतीय इतिहास के संदर्भ में इतिहास लेखन का पुनरीक्षण:**
   - (क) साम्राज्यवादी/औपनिवेशिक इतिहास लेखन।
   - (ख) राष्ट्रवादी इतिहास लेखन।
   - (ग) मार्क्सवादी इतिहास लेखन।
   - (घ) स्त्रीपरक इतिहास लेखन।
   - (ङ) उपाश्रयी इतिहास लेखन।
   - (च) हाशिये के लोगों का इतिहास लेखन।
   - (छ) उत्तर-आधुनिक इतिहास लेखन।
2. **अतीत की विभिन्न दृष्टियाँ: भारतीय, पाश्चात्य एवं क्षेत्रीय**
   - (क) इतिहास-पुराण परंपरा; भारतीय इतिहास बोध।
   - (ख) इतिहास की पाश्चात्य अवधारणाएँ।
   - (ग) क्षेत्रीय बनाम राष्ट्रीय इतिहास।
   - (घ) सांस्कृतिक राष्ट्रवाद।
3. **क्षेत्रीय इतिहास लेखन: राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति**
   - (क) प्रागैतिहासिक शैलकला; नवीन पुरातात्त्विक खोजें; चारण साहित्य एवं इतिहास लेखन; राजस्थान के लोक देवता।
   - (ख) लोक परंपरा एवं इतिहास - महाराणा प्रताप एवं हल्दीघाटी के युद्ध के इतिहास का पुनरीक्षण; चित्तौड़ की रानी पद्मिनी (पद्मावती) का इतिहास।
4. **अतीत एवं इतिहासलेख: संघर्ष एवं विमर्श**
   - (क) प्राचीन भारत: शैल कला; नवीन पुरातत्त्व; सरस्वती नदी पर अनुसंधान; आर्यो का मूल स्थान; वैदिक काल एवं सिंधु-सरस्वती सभ्यता का इतिहास लेखन; रामायण एवं महाभारत में इतिहास लेखन।
   - (ख) मध्यकालीन भारत: देशज साहित्य एवं मध्यकालीन भारतीय इतिहास लेखन; भक्ति आंदोलन एवं सूफी परंपरा (लोक संत)।
   - (ग) आधुनिक भारत: 1857 की क्रांति; सांस्कृतिक पुनर्जागरण; स्वतन्त्रता आंदोलन का इतिहास लेखन - विभिन्न धाराएँ।
   - (घ) समसामयिक इतिहास: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) - विचारधारा एवं अवदान; 'एकात्म मानववाद' के प्रणेता - पंडित दीनदयाल उपाध्याय। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना - कार्यवृत्त एवं इतिहास पुनर्लेखन।
5. **अतीत का भविष्य: वैकल्पिक इतिहास लेखन की खोज एवं भविष्य की कार्य-योजना**
   - (क) इतिहास लेखन की पद्धतियों एवं सरोकारों का पुनर्लेखन।
   - (ख) वैकल्पिक स्रोत: इतिहास की रचना के लिए मौखिक परंपरा, स्मृति, वंशावली, डायरी, नृवंशविज्ञान, आत्मकथा आदि का प्रयोग।
   - (ग) इतिहासकार एवं सामाजिक स्मृति का पुनर्गठन।
   - (घ) सीमाविहीन इतिहास लेखन: नूतन इतिहास की ओर कदम।

नोट : इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के विषय पर केन्द्रित उपविषयों पर आपके शोध-पत्र आमंत्रित हैं। उपविषयों की उपर्युक्त सूची सम्पूर्ण नहीं है, संगोष्ठी के विषय से सम्बन्धित किसी भी अन्य पक्ष या उपविषय पर भी आप अपने शोध पत्र प्रेषित कर सकते हैं।

SUB-THEMES

The major theme of the conference is broadly categorised into following sub-themes:

1. **Revisiting historiography in the context of Indian history:**
   - A. Imperialist /Colonial historiography
   - B. Nationalist historiography
   - C. Marxist historiography
   - D. Feminist historiography
   - E. Subaltern historiography
   - F. Historiography of Marginals
   - G. Post-modern historiography
2. **Multiple Perceptions of the Past: Indian, Western and the Regional**
   - A. Itihasa-Purana tradition; Indian perception of history.
   - B. Western notions of history.
   - C. Regional versus National historiography.
   - D. Cultural Nationalism.
3. **Regional Historiography: History and Culture of Rajasthan**
   - A. Prehistoric rock art; Recent archaeological discoveries; Charan literature and history-writing; Folk deities of Rajasthan.
   - B. Folk Tradition and History : Revisiting the history of Maharana Pratap and the Battle of Haldighati; History of queen Padmini (Padmavati) of Chittor.
4. **Contesting Past and Historiographic discourse**
   - A. Ancient India: Rock Art; New Archaeology; Researches on Saraswati river; Home of the Aryans; Historiography of the Vedic age and the Indus-Saraswati Civilisation; History writing in *Ramayana* and *Mahabharata*.
   - B. Medieval India: Vernacular literature and history-writing; Bhakti Movement and Sufi Tradition (Local saints).
   - C. Modern India: Revolution of 1857; Cultural Renaissance; Historiography of Freedom Movement – various strands.
   - D. Contemporary India: Rashtriya Swayam Sevak Sangh (R.S.S.) - ideology and contribution. Founder of the concept of 'Integral Humanism' - Pandit Deendayal Upadhyaya. Akhil Bharatiya Itihasa Sankalan Yojana - action profile and rewriting of history.
5. **Future of the Past: search for alternative historiography and agenda for the future**
   - A. Redefining the methods and concerns of Historiography.
   - B. Alternative sources: Use of oral tradition, memory, genealogy, ethnography, autobiography, diary etc. in historical reconstruction.
   - C. Historian and the reconstitution of social memory.
   - D. Historiography without boundaries: Trends towards New History.

Note: Though the Conference seeks to provide forum for addressing issues centered on the sub-themes listed above; they, however, are not exhaustive. Papers not directly related to the sub-themes but having bearing on them may also be entertained.

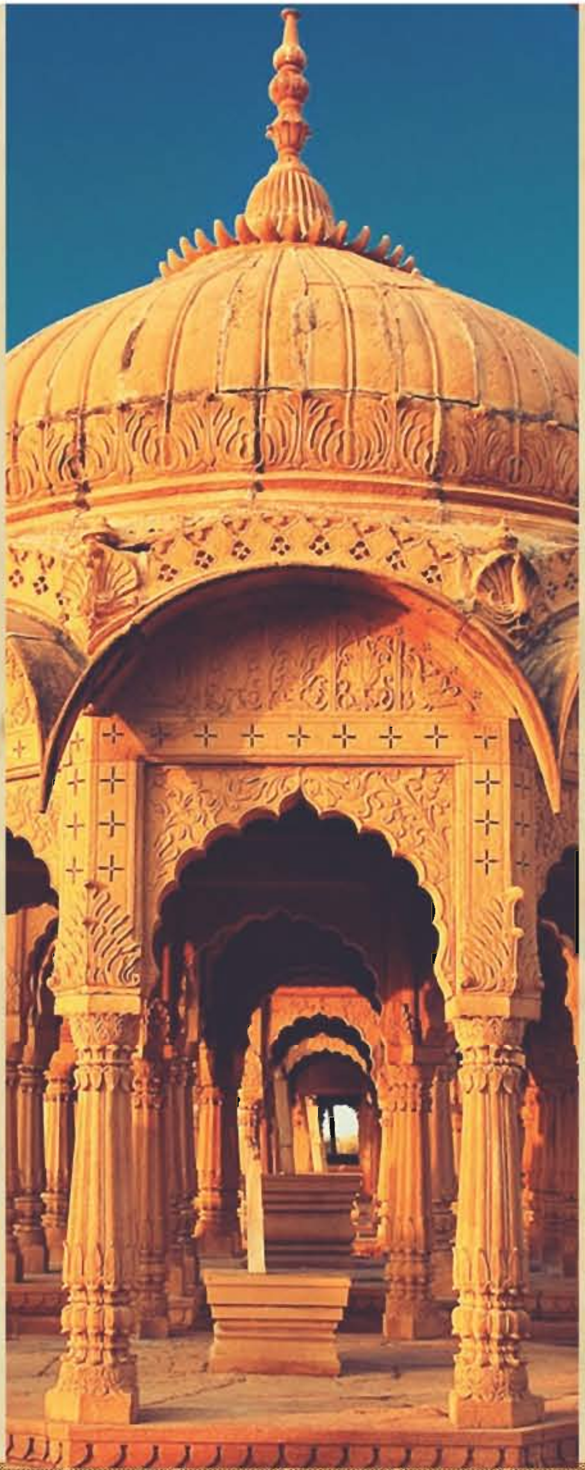

SUBMISSION DETAILS

You may submit your paper in full or an abstract of your paper (in English *Font:* Times New Roman, *Font size*: 12 or in Hindi *Font* : Devlys 10, *Font size* : 14) by January 10, 2018. The paper/ abstract should have a title for the presentation along with the name, mobile number, email id, postal address and institutional affiliation of the presenter and should be sent by post or mailed as an email attachment in MS Word to Prof. Krishna Gopal Sharma, Head, Department of History & Indian Culture, University of Rajasthan, JAIPUR–302004.

Email: uorhistoryconf@gmail.com; hodhistoryuor@gmail.com; kgsharma19@gmail.com

The abstracts of your papers accepted for presentation in the conference will be published in the *Book of Abstracts* or *Souvenir* titled "Revisiting Indian History Writing : Jaipur Conference Notes 2018" which will be released in the inaugural function of the conference. Prior registration for the Conference is mandatory for the presenters whose abstracts will be published in the souvenir.

REGISTRATION

The registration for the Conference will commence from December 10, 2017. Registration Fees shall be applicable as follows:

(December 10, 2017 to January 15, 2018)		(January 16, 2018 to January 19, 2018)	
Outstation Participants (*requiring accommodation*)	Rs. 1500/=	Outstation Participants	Rs. 2000/=
Outstation Participants (*not requiring accommodation*)	Rs. 1000/=	Local Participants	Rs. 1500/=
Local Participants	Rs. 1000/=		

For registration, you may fill up the enclosed Registration Form and send it along with your Registration Fee. You may send your Fee in Cash or by Cheque or Demand Draft drawn in favour of "Head, Department of History & Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur." Fee can also be transferred online to the following bank account: Saving Bank A/c No. : 20270110045060. Account Name : Head, Department of History & Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur. Bank Name : UCO Bank. Branch : University Campus, JLN Marg, Jaipur. IFSC Code : UCBA0002027. MICR : 302028019

Registration Form & Fee can be deposited personally or by messenger or can be mailed at the following address: Prof. Krishna Gopal Sharma, Head, Department of History & Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur-302004, Email: uorhistoryconf@gmail.com ; hodhistoryuor@gmail.com; kgsharma19@gmail.com

The last date of Registration for the Conference is January 15, 2018. Registration for the Conference after this date will be permitted only with the permission of the conference authorities. Registration after January 15, 2018 will be done with a fee of Rs. 2000 (for outside participants) and Rs. 1500 (for local participants). We shall not be able to arrange accommodation for the outside participants who will register for the conference after January 15, 2018.

VENUE & INAUGURAL SESSION

The venue of the Conference will be the Humanities Hall, School of Humanities, University of Rajasthan, Jaipur. Parallel sessions will be organised in the Seminar Hall and Classrooms of the University Department of History & Indian Culture located within the School of Humanities. The Inaugural Session of the Conference will be held on Friday, January 19, 2018 in the Humanities Hall at 10 A.M. Detailed programme of the Conference, showing break-up of sessions and schedule of papers, will be mailed to participants well in advance. The Valedictory Session of the Conference will be held on Saturday, January 20, 2018 at 3.30 P.M. in the Humanities Hall.

IMPORTANT DATES

Registration begins	**December 10, 2017**	Submission of Abstracts	**January 10, 2018**
Last Date of Registration	**January 15, 2018**	Dates of Conference	**January 19 -20, 2018**

All correspondence concerning the Conference should be addressed to :

Prof. Krishna Gopal Sharma (Conference Convener)
Head, Department of History & Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur-302004 (India)
Mob. : +91 9460124663, +91 9079216107
Email : uorhistoryconf@gmail.com; hodhistoryuor@gmail.com; kgsharma19@gmail.com

Department of History & Indian Culture
University of Rajasthan, Jaipur

The Department of History is one of the oldest Departments in the University of Rajasthan, Jaipur. It was founded in 1950 under the headship of eminent historian Prof. Mathura Lal Sharma. The Department acquired its present form as the Department of History and Indian Culture in 1962. Prof. G.C. Pande, renowned scholar, philosopher and historian, joined the Department in 1962 as Tagore Professor of History and Indian Culture. Under his learned and charismatic leadership, the Department gradually acquired a distinctive character with great emphasis on the *Study of Ideas and Movements in History*.

The Department has had the honour of having eminent scholars like Prof. Mathura Lal Sharma, Prof. G.C. Pande, Prof. Satish Chandra, Prof. G.N. Sharma, Prof. Devendra Kaushik, Prof. M.S. Jain, Prof. R. Nath, Prof. S.N. Dube, Prof. V.S. Bhatnagar, Dr. G.S.P. Misra, Dr. Pratibha Jain, Shri R.S. Mishra, Dr. U.C. Chaturvedi, Prof. Rashmi Patni, Prof. B. L. Gupta, Prof. S.S. Ratnawat and others as teaching faculty who have made significant contribution to historical research in their respective specialisations.

The Department is unique in its coverage of socio-political history, arts, architecture, archaeology, religious ideas, historical tourism, and material cultures of India from ancient times to the contemporary era. It also covers a vast array of world history offering many specialised courses on various regions and different epochs. The Department also engages with many emerging concerns, feminism, diaspora, ecology etc., in historical and cultural perspective. The faculty and researchers from the Department also explore cross-disciplinary and interdisciplinary themes through literature, archaeology, ethnography, folklore etc.

The Department has been publishing an annual journal *Jijnasa : A Journal of the History of Ideas and Culture* since 1974. The Department has also brought out many research monographs. The latest publication by the Department was titled *Origin and Rise of Imperial Pratiharas of Rajasthan: Transitions, Trajectories and Historical Change* (2017) authored by Dr. Shanta Rani Sharma.

The Department offers graduate, M.A, M.Phil and Ph.D courses in History. The Department also runs a P.G. Diploma in Indian Culture. The M.A. programme in History, offered by the Department as a two year course (in four semesters) has an intake of 120 students. This course is highly popular as it offers a great variety of papers with updated syllabi and multiple options.

The Department has faculty strength of 21 members.

PROFESSOR & HEAD — Dr. Krishna Gopal Sharma

ASSOCIATE PROFESSORS
Dr. Pramila Sanghvi
Dr. Pramila Poonia
Dr. Sangeeta Sharma

ASSISTANT PROFESSORS
Dr. Abhimanyu Singh Arha
Dr. Archana Tiwari
Ms. Jigyasa Meena
Mr. Mahesh Kumar Dayma
Dr. Neekee Chaturvedi
Mr. Radha Krishna Baror
Dr. Ritu Punia
Mr. Tamegh Panwar
Mr. Yash Jain
Dr. Anil Aaniket
Mr. Harsh Singh Gahlot
Dr. Karmveer Singh
Dr. Mamta Yadav
Dr. Nirmala Kumari Meena
Dr. Rashmi Gurjar
Mr. Shankar Lal Meena
Ms. Vandana Agrawal

भारतीय इतिहास संकलन समिति, जयपुर प्रांत

'अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना' का गठन 1973 ई. में बाबा साहब आप्टे के विचारों को मूर्त रूप देने के लिए संघ के वरिष्ठ प्रचारक मोरोपंत पिंगले एवं ठाकुर रामसिंह जी की प्रेरणा से हुआ। यह योजना भारत के सर्वांगपूर्ण तथ्यपरक प्रामाणिक इतिहास लेखन के लिए आचार्य मल्लिनाथ के सूत्र 'नामूलं लिख्यते किंचित्' के बोध के साथ नवीन तथ्यों के संकलन, विश्लेषण तथा अनुसंधान के द्वारा सत्यपरक एवं राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में इतिहास लेखन के कार्य में संलग्न है। योजना का मुख्यालय बाबा आप्टे स्मृति भवन, केशव कुन्ज, झण्डेवालान, नई दिल्ली में है। इसकी 13 क्षेत्रीय समितियाँ हैं जिनके अन्तर्गत 46 प्रान्तों के 350 जिलों में समितियाँ कार्यरत हैं।

विगत दो दशकों में इतिहास संकलन योजना ने वृहत प्रकल्पों पर कार्य का संकल्प लेकर विसंगतियों के निराकरण तथा आरोपित भ्रमों के समाधान की दिशा में कार्य किया। इनमें सरस्वती नदी शोध प्रकल्प, आर्य समस्या, वैदिक पुरातत्व, महाभारत युद्ध की तिथि सहित गौतम बुद्ध, कौटिल्य, आद्य शंकराचार्य की तिथियों का निर्धारण, युगयुगीन इतिहास-लेखन, जनजातीय इतिहास-लेखन, 1857 का स्वातंत्र्य-समर एवं अन्य शोध कार्य उल्लेखनीय हैं। जनसामान्य में इतिहास बोध तथा इतिहास के स्रोतों के प्रति जागरण के लिए इतिहास दिवस, संगोष्ठियाँ, व्याख्यान शृंखलाएँ तथा कार्यशालाएं आदि का आयोजन इतिहास संकलन योजना के महत्वपूर्ण प्रयास रहे हैं। चुनौतीपूर्ण विषयों की प्रकृति के कारण योजना का कार्य-विस्तार व्यापक बौद्धिक समाज में हुआ है जिसमें महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं शोध-संस्थानों के शोध अध्येता, प्राध्यापक एवं विद्वत-वर्ग सम्मिलित हैं। योजना द्वारा लगभग 400 ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया है तथा दिल्ली से एक अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका 'इतिहास दर्पण' तथा हैदराबाद से एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है।

राजस्थान क्षेत्र को योजना की दृष्टि से तीन प्रांतों- जयपुर, उदयपुर एवं चितौड़ - में विभक्त किया गया है। इन तीनों प्रान्तों में 1990 ई. से ठा. रामसिंह जी के मार्गदर्शन में कार्य प्रारंभ हुआ जो अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है।

भारतीय इतिहास संकलन समिति, जयपुर प्रांत द्वारा विगत दो दशकों में अनेक राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया है जिनमें केशव विद्यापीठ, जामडोली कृषि विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, दुर्गापुरा (जयपुर), राजकीय महाविद्यालय, कोटपूतली एवं पावनधाम, विराटनगर (जयपुर) की राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ उल्लेखनीय हैं। प्रांत के 13 जिलों में जिला समितियाँ कार्यरत हैं जिनके तत्वावधान में समय-समय पर स्थानीय स्तर पर इतिहास विषयक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

क्षेत्रीय कार्यकारिणी

प्रोफेसर के. एस. गुप्ता
संरक्षक : उत्तर-पश्चिम क्षेत्र

श्री रामस्वरूप मिश्र
विद्वत् परिषद् प्रमुख : उत्तर-पश्चिम क्षेत्र

श्री मदन गोपाल व्यास
संगठन सचिव : उत्तर-पश्चिम क्षेत्र

श्री छगन लाल बोहरा
संगठन सह-सचिव : उत्तर-पश्चिम क्षेत्र

प्रांतीय कार्यकारिणी - जयपुर प्रांत

संरक्षक
प्रोफेसर कृष्णगोपाल शर्मा

अध्यक्ष
डॉ. मुरारी लाल शर्मा

उपाध्यक्ष
डा. रमेश चन्द खण्डूरी

उपाध्यक्ष
श्री हरि प्रसाद अग्रवाल

महासचिव
डॉ. सुभाष कौशिक

कोषाध्यक्ष
श्री दिनेश खण्डेलवाल

संगठन सचिव
डॉ. धर्मचन्द चौबे

सचिव
श्री जगदीश प्रसाद यादव

विश्वविद्यालय इकाई प्रमुख
प्रो. विभा उपाध्याय

सदस्य

डॉ. सतीश त्रिगुणायत
डॉ. मदन लाल मीणा
डा. राकेश कुमार शर्मा
डॉ. विश्राम मीणा
श्री धर्मपाल सिंह यादव
डॉ. गोपाल शरण गुप्ता
डा. नरेन्द्र कुमार शर्मा

राष्ट्रीय संगोष्ठी
19 एवं 20 जनवरी, 2018

भारतीय इतिहास लेखन: वर्तमान परिदृश्य तथा संभावनाएं

संरक्षक

प्रोफेसर राकेश कुमार कोठारी
कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सलाहकार मण्डल

प्रोफेसर जे.के. शर्मा
चण्डीगढ़

प्रोफेसर टी.पी. वर्मा
वाराणसी

प्रोफेसर सतीश चन्द्र मित्तल
कुरुक्षेत्र

श्री रामस्वरूप मिश्र
जयपुर

प्रोफेसर के.एस. गुप्ता
उदयपुर

प्रोफेसर अतुल कुमार सिन्हा
बरेली

प्रोफेसर के.एन. दीक्षित
दिल्ली

प्रोफेसर ईश्वर शरण विश्वकर्मा
गोरखपुर

प्रोफेसर वी.एच. सोनावने
वडोदरा

प्रोफेसर विजय कुमार वशिष्ठ
जयपुर

प्रोफेसर एस. पी. बंसल
शिमला

प्रोफेसर सीताराम दुबे
वाराणसी

प्रोफेसर वसंत शिंदे
पुणे

प्रोफेसर शत्रुघ्न शरण सिंह
पटना

प्रोफेसर श्याम नारायण लाल
जम्मू

डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय
दिल्ली

डॉ. कमल नयन
जयपुर

श्री मदनगोपाल व्यास
जोधपुर

आयोजन समिति

प्रोफेसर कृष्णगोपाल शर्मा
विभागाध्यक्ष, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
संरक्षक, भारतीय इतिहास संकलन समिति, जयपुर प्रान्त

डॉ. मुरारी लाल शर्मा
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास संकलन समिति
जयपुर प्रान्त

श्री दिनेश खण्डेलवाल
कोषाध्यक्ष
भारतीय इतिहास संकलन समिति, जयपुर प्रान्त

प्रो. विभा उपाध्याय
विश्वविद्यालय इकाई प्रमुख
भारतीय इतिहास संकलन समिति, जयपुर प्रान्त

डॉ. संगीता शर्मा
निदेशक, राजस्थान अध्ययन केन्द्र
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. नीकी चतुर्वेदी
सहायक आचार्य, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. अभिमन्यु सिंह आढ़ा
उपनिदेशक, संग्रहालय विज्ञान एवं संरक्षण केन्द्र
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

श्री कमल सिंह कोठारी
इतिहास विभाग
लोहिया महाविद्यालय, चूरू

डॉ. सतीश कुमार त्रिगुणायत
इतिहास विभाग, एम.एस.जे. महाविद्यालय
भरतपुर

डॉ. मदनलाल मीना
इतिहास विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
नीम का थाना, सीकर

डॉ. सुरेन्द्र सोनी
इतिहास विभाग
लोहिया महाविद्यालय, चूरू

डॉ. आशा बागोटिया
इतिहास विभाग
राजकीय कन्या महाविद्यालय, टोंक

डॉ. राखी यादव
इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय, चिमनपुरा-शाहपुरा

आयोजन सचिव

डॉ. अनिल अनिकेत
सहायक आचार्य, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
फोन : +91 8764064088, 7976466725

श्री तमेघ पंवार
सहायक आचार्य, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
फोन : +91 9413845645, 8209003317

संगोष्ठी समन्वयक

प्रोफेसर कृष्णगोपाल शर्मा
विभागाध्यक्ष, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-302004 फोन : +91 9460124663, 9079216107
ईमेल :kgsharma19@gmail.com, hodhistoryuor@gmail.com

REGISTRATION FORM

National Conference

Indian History Writing: Present Scenario and Prospects

January 19 & 20, 2018

ORGANISED BY

Department of History and Indian Culture
University of Rajasthan, Jaipur

and

Bharatiya Itihasa Sankalan Samiti
Jaipur Division

Registration No. : Date :

Name____

Designation______________________________________

Office Address____________________________________

____

Residential Address________________________________

____

Mobile No.__________________ E-mail__________________

Tittle of the Paper_____________________________________

____

Date & Time of Arrival_________________________________

Accommodation Required : Yes / No

Registration Fee (Applicable) :

Outstation Participants (requiring accommodation)	Rs. 1500 /-
Outstation Participants (not requiring accommodation)	Rs. 1000 /-
Local Participants	Rs. 1000 /-

The last date of registration for the Conference is January 15, 2018. Therefore, registration will be allowed only with the permission of the Conference authorities. The fee of registration w.e.f. January 16, 2018 till January 19, 2018 will be Rs. 2000 (for outstation participants) and Rs. 1500 (for local participants)

Mode of Deposit : Cash/E-Transfer/Demand Draft/Cheque No./ ______________________ Date ____________

Name of Issuing Bank & Branch ___________________________________

Date : _______________

Place : _______________

Please mail your registration form to: Prof. Krishna Gopal Sharma, Head, Department of History & Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur-302004 (Rajasthan).
Mobile +91 9460124663 Email : uorhistoryconf@gmail.com